एकांकी : आज का संविधान

पात्र : 1. भाग्य 2. दिव्या 3. अर्णव 4. ग्रैस 5. इंशा 6. भूवि 7. निकुंज 8. अर्णव पाटील 9. हस्ती 10. सूर्यांश - अंबेडकर जी की आत्मा 11. रावी

सूत्रधार-(पार्क का वातावरण-चारों तरफ सुंदर पौधे लगे हैं। सभी पर सुंदर-सुंदर फूल लगे हुए हैं।)

(सभी बच्चे आपस में बातें कर रहे हैं। निकुंज मोबाईल में रील्स देख रहा है और अपने दोस्तों को रील्स और मीम देख-देखकर सुना रहा है।)

सूत्रधार: वर्तमान युवा पढ़ा-लिखा और आधुनिकता की कटपुतली है, वह सपने भी बड़े देखता है और बड़े सपनों की भ्रमित दुनिया में जीता है...लेकिन क्या वह अपने अधिकारों और कर्तव्यों को सही मायने में समझता है? तो आइए देखते हैं एकांकी 'आज का संविधान '

निकुंज : (मोबाइल देखते हुए) अरे देखो, इंस्टाग्राम पर यह मीम कितना फनी है- 'पढ़ाई से ज्यादा जरूरी है वाई-फाई!'

इंशा (खिझाते हुए): हाँ, और इन्जैम के टाइम-'भगवान, बस पास करा दो, अगली बार पक्का पढ़ूँगा! तब तो तुम्हारा ही मीम बन जाएगा ...। (सभी हँसते हैं)

दिव्या : (मुस्कुराते हुए) तुम लोग मजाक कर रहे हो, लेकिन वास्तविकता में हम जरूरी चीजों को मजाक बना देते हैं-जैसे हमारा संविधान।

भाग्य : कल संविधान दिवस है, लेकिन सच कहूँ तो हम इसे सिर्फ एक औपचारिक दिन की तरह या एक चैप्टर ही समझते हैं। हमें यह तो पता है कि यह महत्वपूर्ण है, लेकिन यह हमारे जीवन में कैसे लागू होता है, यह हम ठीक से नहीं समझते।

हस्ती : संविधान दिवस!!! यह क्या होता है ?

दिव्या : अरे! तुझे इतना भी नहीं पता?

भूवि : संविधान दिवस मतलब 'संविधान का जन्मदिन' जिसके निर्माता डॉ.भीमराव अंबेडकर जी हैं।

हस्ती : (आश्चर्य से) 'संविधान का जन्मदिन ??? (हँसते हुए) मैंने प्रधानमंत्री का जन्मदिन, राष्ट्रपति का जन्मदिन, बच्चन जी का जन्मदिन ये सब तो सुना है लेकिन 'संविधान का जन्मदिन' यह पहली बार सुना है । आखिर ये संविधान होता क्या है?

दिव्या : आज हर भारतीय जिस सम्मान और आजादी से जी रहे हैं, वह सब किसकी वजह से है?

भाग्य : संविधान की वजह से, संविधान की वजह से,

इंशा : आज सतहत्तर साल हो गए; हमारे देश को आजाद होकर, क्या हमने संविधान पढ़ा?

हस्ती : नहीं पढ़ा,

इंशा : क्या आपने पढ़ा?

निकुंज : नहीं पढ़ा,

इंशा : क्या आपने पढ़ा?

अर्णव पाटील : नहीं पढ़ा, नहीं पढ़ा, नहीं पढ़ा !!

इंशा: देखा आपने, किसी ने नहीं पढ़ा संविधान।

निकुंज : आखिर संविधान ने हमें दिया क्या है?

भाग्य : अरे! संविधान ने ही तो हमें समानता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुता जैसे मौलिक अधिकार दिए हैं।

दिव्या : संविधान ने हमें सिर्फ अधिकार नहीं दिए, बल्कि हमें यह भी सिखाया है कि दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। अगर हम इसे समझ लें, तो समाज में बहुत कुछ बदल सकता है।

अर्णव: पर असलियत तो यह है कि आज भी लोग बराबरी की बात करते हैं, लेकिन व्यवहार में भेदभाव दिख ही जाता है। कभी जाति, कभी पैसे, कभी स्टेटस के नाम पर लोगों को अलग किया जाता है।

दिव्या : जब किसी के साथ गलत होता है, तब हमें संविधान याद आता है... लेकिन बाकी समय हम चुप रहते हैं।

इंशा : और हम सबकी चुप्पी गलत की ताकत बढ़ा देती है। अगर हम आवाज नहीं उठाएँगे, तो बदलाव कैसे आएगा?

ग्रैस : और सबसे ज्यादा दुख तब होता है, जब पढ़े-लिखे लोग भी ऐसा करते हैं। हमें लगता है कि शिक्षा सब बदल देगी, लेकिन इंसान को अपनी सोच बदलना अभी भी बाकी है।

इंशा : मुझे लगता है कि कहीं-न-कहीं पूरी तरह से हम सब जिम्मेदार हैं। हम गलत को देखकर चुप रहते हैं, इसलिए दिन-ब-दिन बुराइयाँ और मजबूत होती जा रही है।

सूर्यांश : आस-पास में व्यक्तिगत तौर पर यह स्पष्ट दिखाई देता है लेकिन सोशल मीडिया पर भी यही हो रहा है। लोग बिना सोचे-समझे कुछ भी शेयर कर देते हैं, जिससे नफरत और गलतफहमियाँ बढ़ती हैं।

निकुंज: अगर हम चाहें तो इसी सोशल मीडिया को जागरूकता फैलाने का सबसे बड़ा माध्यम बना सकते हैं। यह हमारे ऊपर है कि हम इसका उपयोग कैसे करते हैं।

अर्णव पाटील : कभी-कभी लगता है कि हम इतने छोटे हैं कि हम क्या बदलाव ला सकते हैं लेकिन मुझे ऐसा लगता है, शायद हर बड़ा बदलाव एक छोटी शुरुआत से ही होता है।

हस्ती : बिल्कुल, अगर हम अपने आस-पास के लोगों के साथ बराबरी और सम्मान का व्यवहार शुरू कर दें, तो हम सब के लिए वही एक बड़ा बदलाव बन सकता है।

(एक ओर से प्रकाश तीव्र होता है और अचानक अंबेडकर जी का प्रवेश होने से सभी बच्चे चौंक जाते हैं)

अंबेडकर जी: तुम सब सही दिशा में सोच रहे हो... लेकिन सोचने से कोई बदलाव नहीं होता। सोच को कर्म में बदलना ही असली चुनौती है।

सभी बच्चे (एक साथ): आप... आप डॉ. अंबेडकर जी हैं?

अंबेडकर जी : हाँ, मैं वही हूँ जिसने तुम्हें समानता, न्याय, स्वतंत्रता आदि अधिकारों का मार्ग दिखाया... लेकिन क्या तुम उस मार्ग पर चल रहे हो?

भाग्य : सर, हमने संविधान सिर्फ किताबों में पढ़ा है, लेकिन उसका उपयोग नहीं... हम समझना चाहते हैं, लेकिन उस रास्ते पर कैसे चलना है ? हमें इसका बोध नहीं ।

अंबेडकर जी : रास्ते हमेशा स्पष्ट नहीं होते, लेकिन सही सोच और शिक्षा तुम्हें सही दिशा जरूर दिखाती है।

दिव्या : सर, क्या सच में भारतीय युवा अपने समाज को बदल सकते हैं?

अंबेडकर जी : युवा ही समाज की सबसे बड़ी शक्ति होते हैं। अगर देश का युवा जागरूक और एक्जुट हों, तो उसके लिए कोई भी बदलाव असंभव नहीं है।

अर्णव : सर, हमने अपने अधिकारों और कर्तव्यों का सदा दुरुपयोग किया है। हम अपनी गलतियों को कैसे सुधार सकते हैं?

अंबेडकर जी : अर्णव ! गलती मानना ही सबसे बड़ा प्रायश्चित होता है। इसे ही प्रायश्चित का पहला कदम मानते हुए आगे सही कदम उठाना जरूरी है।

ग्रैस: सर, हमें अपने व्यवहार में क्या बदलाव लाना चाहिए?

अंबेडकर जी :बेटा ग्रैस, हर व्यक्ति को सम्मान देना सीखो, चाहे वह किसी भी पृष्ठभूमि से क्यों न हो।

इंशा : सर, समानता, न्याय, स्वतंत्रता और बंधुता के प्रति ईमानदारी से आगे बढ़ते हुए अगर हम अकेले रह जाएँ तो ...?

अंबेडकर जी :सही रास्ते पर चलने वाला कभी अकेला नहीं होता। धीरे-धीरे लोग खुद तुम्हारे साथ जुड़ते जाएँगे। एक दिन तुम्हारी ईमानदारी ही तुम्हारी ताकत बन जाएगी ।

सूर्यांश: सर, वर्तमान समय को देखते हुए सोशल मीडिया के बारे में आपका क्या संदेश है?

अंबेडकर जी : सोशल मीडिया वर्तमान समय की सबसे बड़ी ताकत है । उसे ज्ञान और सच्चाई फैलाने का माध्यम बनाओ, न कि नफरत और भ्रम का । इस मंच से तुम अपनी बात संपूर्ण विश्व के लोगों तक पहुँचा सकते हो । लोगों तक कम समय और कम लागत में अत्यंत प्रभावी सदेश दिया जा सकता है । काश ! यह हमारे समय में होता ...! मगर तुम सब लक्की हो ।

निकुंज : सर, क्या हम सच में बदलाव ला सकते हैं?

अंबेडकर जी : अगर तुम्हारा इरादा मजबूत है, तो बदलाव निश्चित है।

भूवि : सर, हमें शुरुआत कहाँ से करनी चाहिए?

अंबेडकर जी: भूवि, इंसान को किसी भी काम की शुरुवात अपने आप से... अपने विचारों से... अपने व्यवहार से करनी चाहिए ।

दिव्या: सर, हम वादा करते हैं कि हम आपके दिखाए रास्ते पर चलेंगे।

अंबेडकर जी: मुझे तुम सब पर विश्वास है... मेरे प्यारे बच्चो लेकिन याद रखो-संविधान सिर्फ एक दस्तावेज नहीं, यह तुम्हारी जिम्मेदारी है, तुम्हारा अधिकार है । आज भी, और कल भी !

(प्रकाश हल्का होता है और अंबेडकर जी मंच से धीरे-धीरे चले जाते हैं)

सूत्रधार : हमें याद रखना होगा कि जब युवा जागता है, तभी समाज आगे बढ़ता है।

सभी: 'हम समानता, न्याय और सम्मान का पालन करेंगे,

और संविधान के मूल्यों को अपने जीवन में अपनाएँगे!

डॉ. पूजा हेमकुमार अलापुरिया

कायस्थम 23 अप्रैल को भगवान श्री चित्रगुप्त के प्रकटोत्सव पर पूजन, हवन और भंडारा करेगा

भोपाल । कायस्थम, मध्यप्रदेश आगामी गुरुवार 23 अप्रैल को भगवान श्री चित्रगुप्त जी के प्रकटोत्सव के अवसर पर पूजन, हवन, प्रसादी वितरण और भंडारे का आयोजन करेगा।

भगवान श्री चित्रगुप्त जी के पूजन, हवन का कार्यक्रम अपरान्ह 3 बजे से प्रोफेसर कॉलोनी में संकट मोचन हनुमान मंदिर स्थित श्री चित्रगुप्त मंदिर में होगा। पूजन, हवन महाआरती के बाद इसी स्थान पर शाम 4 बजे से भंडारा होगा और भक्तगण प्रसादी ग्रहण करेंगे।

कायस्थम परिवार के गायक सदस्य भगवान श्री चित्रगुप्त पर आधारित भजन की प्रस्तुति देंगे। इस अवसर पर कायस्थम के पदाधिकारी,सलाहकार मंडल , कार्यकारिणी तथा विशेष आमंत्रित एवं आयोजन समिति के सदस्य और कायस्थम के सदस्य तथा कायस्थजन भी उपस्थित रहेंगे। कायस्थम ने सभी चित्रांश बंधुओं से पूजन और भंडारे में शामिल होने की अपील की है।

जातिगत भेदभाव

जाति श्रम का विभाजन नहीं, बल्कि श्रमिकों का विभाजन है

ऐसा कोई एक निश्चित वर्ष नहीं है जब जातिगत भेदभाव 'शुरू' हुआ हो। यह बहुत लंबे समय के दौरान धीरे-धीरे विकसित हुआ। यह 1500–1000 ईसा पूर्व का समय था। इसकी जड़ें अक्सर ऋग्वेद के समय (लगभग 1500–1200 ईसा पूर्व) से जोड़ी जाती हैं।

'पुरुष सूक्त' नामक एक भजन में चार वर्णों (सामाजिक श्रेणियों) का वर्णन किया गया है। हालाँकि, इस चरण में, यह व्यवस्था उतनी कठोर या जन्म-आधारित नहीं थी, जैसी कि बाद के जातिगत भेदभाव में देखने को मिली। लेकिन धीरे-धीरे, 500 ईसा पूर्व और 300 ईसा पूर्व के बीच, 'मनुस्मृति' जैसे ग्रंथों ने सामाजिक पदानुक्रम को औपचारिक रूप देना शुरू कर दिया। इस दौरान, जाति व्यवस्था उत्तरोत्तर वंशानुगत और प्रतिबंधात्मक होती गई। शुद्धता, अपवित्रता और सामाजिक अलगाव की धारणाएँ और अधिक प्रबल हो गईं। यहाँ इसके कुछ सबसे क्रूर पहलू दिए गए हैं:

▶▶अस्पृश्यता

सदियों तक, कठोर जातिगत पदानुक्रम के तहत दलितों को 'अपवित्र' माना जाता रहा। इसके परिणामस्वरूप निम्नलिखित स्थितियाँ उत्पन्न हुईं: उच्च जातियों से शारीरिक अलगाव घरों, मंदिरों और कुछ क्षेत्रों में तो सार्वजनिक सड़कों पर भी प्रवेश करने पर प्रतिबंध जबरन दूरी बनाए रखना–लोग उन्हें छूते तक नहीं थे, और कभी-कभी तो उनकी परछाईं से भी बचते थे स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस प्रथा को औपचारिक रूप से समाप्त कर दिया गया था, लेकिन इसके प्रभाव आज भी बने हुए हैं।

▶▶बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित करना

दलितों को अक्सर निम्नलिखित अधिकारों से वंचित रखा जाता था: शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार सार्वजनिक कुओं, स्कूलों और मंदिरों का उपयोग करने का अधिकार भूमि के स्वामित्व का अधिकार इस संस्थागत बहिष्कार ने यह सुनिश्चित किया कि पीढ़ियाँ-दर-पीढ़ियाँ गरीबी के जाल में ही फँसी रहें।

▶▶जबरन थोपे गए पेशे

कई लोगों को अपमानजनक और जोखिम भरे कार्यों तक ही सीमित कर दिया गया था, जैसे: मैला ढोना (हाथों से मानव मल की सफाई करना) मृत पशुओं को उठाना-हटाना चमड़े का काम करना ये पेशे वंशानुगत होते थे और सामाजिक दबाव के चलते जबरन करवाए जाते थे, न कि अपनी स्वेच्छा से चुने जाते थे।

▶▶हिंसा और अत्याचार

जाति-आधारित हिंसा एक लगातार बनी रहने वाली समस्या रही है: सार्वजनिक रूप से पिटाई करना, भीड़ द्वारा पीट-पीटकर मार डालना (लिंचिंग), और सामूहिक नरसंहार लित महिलाओं के विरुद्ध यौन हिंसा जातिगत नियमों का 'उल्लंघन' करने पर दंड देना (जैसे जूते पहनना, शादियों में घोड़े पर चढ़ना, या साझा संसाधनों का उपयोग करना) इसके उदाहरणों में 'किलवेनमणि नरसंहार' और 'खैरलांजी नरसंहार' जैसी घटनाएँ शामिल हैं।

▶▶सामाजिक बहिष्कार और अलगाव

पूरे के पूरे समुदायों को समाज से बाहर किया जा सकता था: बाज़ारों और रोज़गार तक पहुँच से वंचित रखना गाँवों के बाहर अलग बस्तियों में रहने के लिए मजबूर करना सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रमों से बाहर रखना

▶▶धार्मिक औचित्य

जाति-व्यवस्था को अक्सर ग्रंथों और परंपराओं की व्याख्याओं के ज़रिए सही ठहराया जाता था, जिससे इसे चुनौती देना और भी मुश्किल हो जाता था। बी. आर. अंबेडकर और ज्योतिराव फुले जैसे सुधारकों ने इन विचारों के खिलाफ़ ज़ोरदार लड़ाई लड़ी।

▶▶मनोवैज्ञानिक आघात और पीढ़ियों पर असर

शारीरिक नुकसान के अलावा, जातिगत भेदभाव के कारण ये चीजें भी हुईं: गहरा सामाजिक कलंक गरिमा और आत्म-सम्मान का नुकसान पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलने वाला आघात और सामाजिक-आर्थिक रूप से ऊपर उठने के सीमित अवसर। जाति और सामाजिक विभाजन की इस उथल-पुथल के बीच एक चमकता हुआ और उज्ज्वल मोती पैदा हुआ। वह दिन 14 अप्रैल, 1891 का था, जब महू (जो अब मध्य प्रदेश में है) में हमारे बाबासाहेब का जन्म एक दलित वर्ण (जिसे पहले 'अछूत' कहा जाता था) के परिवार में हुआ और उन्हें बचपन में ही भयंकर भेदभाव का सामना करना पड़ा। तमाम मुश्किलों के बावजूद, उन्होंने कोलंबिया यूनिवर्सिटी और लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में पढ़ाई की और अर्थशास्त्र तथा कानून में कई डिग्रियाँ हासिल कीं। उन्होंने दलितों और अन्य वंचित समुदायों के अधिकारों के लिए अथक प्रयास किए, और समानता, शिक्षा तथा न्याय को बढ़ावा दिया। वे भारत के संविधान के मुख्य निर्माता थे और उन्होंने भारत के पहले कानून मंत्री के रूप में कार्य किया। उन्होंने राजनीतिक दलों की स्थापना की और सामाजिक तथा आर्थिक सुधारों की वकालत की। 1956 में, उन्होंने जातिगत भेदभाव को नकारते हुए, लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अपना लिया। उनका निधन 6 दिसंबर, 1956 को हुआ। राष्ट्र-निर्माण में उनकी भूमिका हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आरुषि कक्षा: 12वीं GSSS गाहलियां स्कूल
राजीव डोगरा युवा कवि लेखक और भाषा अध्यापक पता-गांव जनयानकड़, कांगड़ा हिमाचलप्रदेश
Rajivdograv@gmail.com
, 9876777233 ,7009313259

छत्तीसगढ़ की बिटिया डॉ. शिखा गोस्वामी को मिला

Global Icons of India 2026 Award

छत्तीसगढ़ के मुंगेली जिले की सुप्रसिद्ध साहित्यकार, कवयित्री एवं उपन्यासकार डॉ. शिखा गोस्वामी 'निहारिका' को साहित्य के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए नासिक (महाराष्ट्र) से Global Icons of India Award से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उन्हें हिंदी साहित्य के प्रति उनके समर्पण, रचनात्मकता और समाज को प्रेरित करने वाली रचनाओं के लिए प्रदान किया गया।

डॉ. शिखा गोस्वामी 'निहारिका' पिछले कई वर्षों से साहित्य साधना में निरंतर सक्रिय हैं। उनकी लेखनी में समाज की संवेदनाएँ, महिलाओं की पीड़ा, संघर्ष, प्रेरणा और जीवन के गहरे अनुभवों की झलक देखने को मिलती है। उनकी रचनाएँ पाठकों को भावनात्मक रूप से जोड़ने के साथ-साथ सकारात्मक संदेश भी देती हैं।

बताते चले कि निहारिका मुस्किल हालातो से लड़ते हुए भी आज अपनी पहचान स्थापित करने में सफल हुई है। इनके प्रशंसकों की संख्या विदेशों मे भी है।

अब तक उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें कुछ भीगे अल्फाजों में, वजह मिल गई, निहारिका की प्रेरक कथाएँ, आकांक्षी तथा Aspirant जैसे महत्वपूर्ण पुस्तकें शामिल हैं। उनकी रचनाएँ देश-विदेश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और साहित्यिक मंचों पर प्रकाशित होकर सराही जा चुकी हैं।

निहारिका 'बलात्कार' जैसे मुद्दे पर बेबाकी से अपनी बात रखने के लिए जानी जाती है। उनकी दिल्ली रेप कांड पर आधारित निर्भया सांझ नामक चर्चित पुस्तक है, जिसमे दुष्कर्मियों से बचने के बहुत से कारगर तरीके बताए गए हैं।

इस सम्मान के माध्यम से डॉ. निहारिका के साहित्यिक योगदान को राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान मिली है। इस उपलब्धि पर साहित्य प्रेमियों, पाठकों और क्षेत्रवासियों ने उन्हें शुभकामनाएँ देते हुए इसे छत्तीसगढ़ के लिए गौरव का क्षण बताया है।

डॉ. निहारिका ने इस सम्मान के लिए प्रशंसकों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान उन्हें साहित्य सृजन के क्षेत्र में और अधिक मेहनत और समर्पण के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा।

12 अप्रैल'2026 पड़रौना कुशीनगर में 'जनार्दन पांडेय अनुरागी' साहित्य सम्मान से सम्मानित 'यमराज मित्र' के नाम से चर्चित गोण्डा के वरिष्ठ कवि/साहित्यकार सुधीर श्रीवास्तव ने शिखा की इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बधाइयां, शुभकामनाएं, आशीर्वाद देने के साथ उज्ज्वल भविष्य की कामना की और कहा कि शिखा की जिजीविषा अनुकरणीय है।

अपनी शारीरिक विसंगतियों को आड़ना दिखाते हुए आगे बढ़ते हुए शिखा का निरंतर निखरता व्यक्तित्व निराशा की दलदल में जनमानस को आशा का संचार करने की दिशा में एक बड़ा कदम साबित होगा और होना भी चाहिए।

गरीबी की मार, दिल को बहुत हिला देती है, आँसू छुपाकर भी, दर्द को दिखा देती है...

बड़े घरों की शीतलता के जतन में पीत पर भरी गर्मी में बोझा ढोती यह गरीबी केवल मजबूरी और अभाव का नाम नहीं है,यह पापी पेट से जुड़ी एक ऐसी परीक्षा है जो मजदूर के धैर्य,साहस और संकल्प को हर दिन परखती है।यह उस मौन पीड़ा का नाम है जिसे शब्दों में व्यक्त करना आसान नहीं लेकिन इसकी झलक परिस्थितियों के मारे इस मजदूर के पसीने की हर बूंद में साफ दिखाई देती है।

यह केवल शरीर से ही नहीं, बल्कि मन और आत्मा से भी कड़ा श्रम कर रहा है। इसके कदमों को न तो तेज धूप की तपिश रोक पाती है न ही कड़कड़ाती ठंड और नहीं मूसलाधार बारिश क्योंकि इसकी निगाहें इन परिस्थितियों पर नहीं बल्कि अपने परिवार की भूख पर टिकी होती हैं। इसके लिए दिनभर का संघर्ष सिर्फ इस लक्ष्य के इर्द-गिर्द घूमता है कि बस आज इतना कमा लूं कि घर में चूल्हा जल सके।इसकी जेब भले ही खाली रहती हो लेकिन इसका हौसला हमेशा भरा रहता है।यह हर दिन नए संकल्प के साथ उठता है,अपनी पीठ पर बोझ उठाता है और जीवन की राह पर आगे बढ़ता है।समाज के ताने,परिस्थितियों की मार और संसाधनों की कमी इन सबके बावजूद वह हार नहीं मानता क्योंकि इसे पता है कि रुकना केवल इसकी हार नहीं बल्कि पूरे परिवार की हार है।ग़रीबी इंसान को तोड़ती जरूर है लेकिन जो इसे सहकर भी खड़ा रहता है,वह भीतर से बेहद मजबूत बन जाता है।यह एहसास कराता है कि परिस्थितियाँ चाहे जितनी भी कठिन क्यों न हों,यदि मन में दृढ़ संकल्प हो तो हर मुश्किल को पार किया जा सकता है।हर दिन का यह संघर्ष समाज की नजरों में भले ही अनदेखा रह जाए लेकिन इसकी यह यात्रा ही इसकी सबसे बड़ी जीत की कहानी बनती है....

मनोज अरुण व्यास,
प्रस्तुति-जवाहर डोसी पीयूष

महिलाओं को सर्वोच्च स्तर पर निर्णय सक्षम बनाएगा

नारी शक्ति वंदन अधिनियम - डॉ रश्मि सिंह

दिल्ली। नारी शक्ति वंदन अधिनियम देश की महिलाओं को सर्वोच्च स्तर पर निर्णय सक्षम बनाएगा। शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता और प्रशिक्षण से महिलाओं को अपना स्थान बनाने में सहायता मिलेगी। दिल्ली सरकार के महिला एवं बाल विकास विभाग में सचिव डॉ रश्मि सिंह ने हिन्दू कालेज में महिला विकास प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित 'संवाद' में कहा कि देश भर में पंचायती राज और स्थानीय निकायों में एक निश्चित प्रतिशत महिलाओं का सुरक्षित है जिससे हर वर्ग की महिलाएं लाभान्वित हुई हैं। आयोजन में राष्ट्रिय सेवा योजना तथा एन सी सी की भी भागीदारी रही।

डॉ. रश्मि सिंह ने अपने उद्बोधन में नारी शक्ति वंदन अधिनियम के महत्व, उसके सामाजिक प्रभाव तथा महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। डॉ सिंह ने बताया कि यह अधिनियम महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और इससे समाज में समानता तथा न्याय की भावना को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही उन्होंने छात्राओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहने और समाज में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अंत में प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने अपने विचार एवं जिज्ञासाएं प्रस्तुत कीं। एक विद्यार्थी के प्रश्न के जवाब में श्रीमती सिंह ने कहा कि पंचायती राज के अनुभवों से हमने बहुत सीखा है और अब शिक्षा, प्रशिक्षण एवं संवेदनशीलता से ही हम सफलता प्राप्त कर सकेंगे जिसमें नारी शक्ति वंदन अधिनियम जैसे संवैधानिक उपाय हमारा मार्ग प्रशस्त करेंगे।

आयोजन में राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी डॉ पल्लव कुमार नन्दवाना, एन सी सी अधिकारी डॉ सोमशंकर गोडाके एवं डॉ मनोज चहल ने अपनी अपनी विंग के कैडेट्स व स्वयंसेवकों सहित भागीदारी की। संवाद में प्रो रचना सिंह, प्रो बिमलेंदु तीर्थंकर, डॉ अनन्या बरुआ, डॉ एकता गुप्ता, डॉ प्रज्ञा त्रिवेदी सहित बड़ी संख्या में महाविद्यालय के संकाय सदस्य उपस्थित थे।

इससे पहले महाविद्यालय में पहुंचने पर महाविद्यालय प्राचार्य प्रो अंजू श्रीवास्तव, उप प्राचार्य प्रो रीना जैन, प्रशासनिक अधिकारी राजेश शर्मा, दीपाक्षी जैन सहित विद्यार्थियों ने डॉ रश्मि सिंह का स्वागत किया। प्रो श्रीवास्तव ने महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना एवं अन्य संस्थाओं द्वारा महिला एवं बाल विकास के लिए आयोजित गतिविधियों के बारे में भी बताया। कार्यक्रम के अंत में महिला विकास प्रकोष्ठ की परामर्शदाता डॉ नीलम सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया। आयोजन में युवा वर्ग की उपस्थिति अत्यंत उत्साहप्रद एवं प्रेरक रही।

डॉ नीलम सिंह
सहायक आचार्य हिंदी विभाग
एवं परामर्शदाता, महिला विकास प्रकोष्ठ
हिन्दू कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली मो - 9953808001